अमर उजाला

बरेली
शुक्रवार, 17 अप्रैल 2026
वैशाख अमावस्या
विक्रम संवत 2083

PAGE NO : 04 BOTTOM

शायरों ने अपनी रचनाओं से श्रोताओं का मन मोहा

स्टेडियम रोड स्थित रिद्धिमा सभागार में आयोजित बज़्म-ए-सुखन में कलाम पेश करते शायर। स्रोत : संस्था

बरेली। स्टेडियम रोड स्थित रिद्धिमा सभागार में बृहस्पतिवार को एक यादगार मुशायरे 'बज़्म-ए-सुखन' का आयोजन किया गया। इस काव्य गोष्ठी में बरेली सहित अलीगढ़ और बदायूं के नामचीन शायरों ने अपनी रचना से श्रोताओं का मन मोह लिया। कार्यक्रम की शुरुआत शायर इस्तखार अहमद नाज़ुक के कलाम से हुई, जिसे दर्शकों ने खूब सराहा।

शायर कामिल हुसैन रिजवी ने जब अपनी पंक्तियां कैद करने के भी हकदार नहीं हैं वो लोग, रहम खाने को भी तैयार नहीं हैं वो लोग और रास्ता रोकेंगे फिर भी मुझे जाने देंगे, दोस्त हैं आहनी दीवार नहीं हैं वो लोग पढ़ीं, तो पूरा सभागार तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। बदायूं से आए डॉ. सैयद इमरान अली रिजवी ने अपनी नज़्म पेश की। अलीगढ़ से आईं शायरा तस्लीम खानो ने अपना कलाम पेश किया। बदायूं के मुहम्मद शमसुद्दीन शम्स ने अपने कलाम के जरिए सामाजिक रिश्तों और जीवन के दर्शन को पिरोया। सरवत परवेज की प्रस्तुति ने महफिल का समापन किया। महफिल के आखिरी पड़ाव पर बरेली के सरवत परवेज ने अपनी भावपूर्ण पंक्तियों से श्रोताओं का दिल जीत लिया। इस दौरान संस्थापक एवं अध्यक्ष देव मूर्ति सहित कई गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे। संवाद